जनसंचार माध्यमों का सामाजिक आर्थिक प्रभाव - एक अध्ययन

¼N-x- d nxl ftyk d lktk fodkl [kM d fo'k"k lnHk e½

✧ डॉ. श्रीमती वृन्दा सेनगुप्ता

1- tulpkj ek/;ek dh i"BHkfe&आज का मानवीय जीवन जनसंचार माध्यमों के बिना अधूरा है। मीडिया, सिनेमा केबल, कम्प्यूटर, टेलीफोन, ई–मेल, मोबाइल वे माध्यम है जिन्होंने दो स्थानों एवं दो व्यक्तियों की मध्य की दूरी को समाप्त कर भारत की इस उक्ति को चरितार्थ किया है कि **lkjk fo'o ,d ifjokj gA** कुछ समय पहले मनुष्य की जो विलासी या आरामदायक आवश्यकताएं मानी जाती थी आज वे मानवीय जीवन का अनिवार्य अंग बन चुकी है और इसमें मुख्यतः जनसंचार के माध्यम ही है। वर्तमान समय में मुख्य रूप से मोबाइल, टी.वी, इंटरनेट, केबल, टेलीफोन, ई–मेल, एवं कम्प्यूटर में जनसंचार के माध्यम है, जो धीरे – धीरे मानवीय जीवन के विकास आधार बन रहे है। आज इंटरनेट की मदद से ही हम विश्व के अनमोल साहित्य को अमरता प्रदान कर सकते है तथा जनसंचार माध्यम ही वे उपाय है जिनसे शोध विषय वस्तु न्यूनतम समय, श्रम एवं पूजा से शोधकार्य को सकारात्मक स्वरूप प्रदान किया जा सकता है। ये जनसंचार माध्यम व्यक्ति के समाजिक जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में सफल हुए है। आज जिस भूमंडलीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण की सर्वाधिक चर्चा की जाती है वह जनसंचार माध्यम के गर्भ से ही निकला है। अतः जनसंचार माध्यमों का भावी स्वरूप मानवीय जीवन को सदृढ़ता प्रदान करने वाला होगा।

2- lkekftd n'kk ,o fn'kk&मानव एक सामाजिक प्राणी होने के नाते तथा आर्थिक क्षेत्र मानव जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा होने के कारण मानव सामाजिक विकास के लिये सर्वाधिक प्रयत्नशील रहता है। यदि भारतीय समाज की दशा का अवलोकन करें तो प्राचीन समय से भारतीय समाज एक उन्नत समाज रहा है जो समाज के सभी वर्गो को महत्व देता है एक ओर तो यहां नारी एवं पुरूष के बिना धार्मिक व अन्य कार्य अधुरे माने जाते है तो दूसरी ओर संयुक्त परिवार भारतीय समाज की एक महत्वपूर्ण कड़ी थे। जिसके कारण भारतीयो में जो परस्पर घनिष्ठता थी वह हमेशा विदेशियों के आकर्षण का केन्द्र रही किंतु समाज की यह दशा वर्तमान समय में दिशा हीन रूप में परिवर्तित हो रही है क्योंकि एक ओर संयुक्त परिवार टुट रहे है तथा दूसरी ओर मानवीय संवेदनाएं भौतिक उपलब्धियों के नीचे दम तोड़ रही है। पहले किसी गांव व कस्बे का हर आदमी एक दुसरे से परिचित रहा करता था। जबकि आज एक ही गली के व्यक्ति अपरिचितों की तरह जीवन यापन कर रहें यह एकाकी जीवन सामाजिक जीवन के मूल को नष्ट कर रहा है। ऐसी दशा में जनसंचार माध्यम ऐसे रामबाण सिद्ध हो सकते है जिसके संधान से टुटे रिश्तों को जोड़कर समाज में प्राणवायु लायी जा सकती है ताकि समाज की दिशा अपनी दिशा को प्राप्त कर सकें तथा उसमें उत्तरोत्तर वृद्धि भी कर सके।

3- Hkkjrh; lekt ij tulpkj ek/;ek dk iHkko–संचार माध्यमों से गांव गांव में जागृति आई है। इसका सबसे बडा प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों में देखने को मिलता है। शहरी क्षेत्र में तो महिलाएँ पारिवारिक दायित्वों के साथ नौकरी कर रही है तथा ग्रामीण महिलाएँ जो चारदीवारी में बंद थी पुरूषों के समकक्ष आ गई है। संचार –माध्यमों के कारण आज महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता आ गई है। वे अनेक सामाजिक राजनीतिक कार्यक्रमों में भाग ले रही है। संचार माध्यमों के कारण आज बच्चों का पढाई प्रति रूझान बढ़ा है, क्योकि उन्हें कम्प्यूटर ,इंटरनेट,दूरदर्शन,दूरभाष से बहुत अधिक जानकारी मिलती है। संचार माध्यमों ने व्यक्ति की सामाजिक स्थिति में बहुत परिवर्तन किया है। आज व्यक्ति का कार्यक्षेत्र एक व्यवसान एक सीमित न रहकर अनेक भागों में बंट गया हैं।

संचार–माध्यमों के जरिए कुटीर उघोग के विकास संबंधी गतिविधियों को प्रोत्साहन मिला है। संचार–माध्यमों ने ही लोगों की जीवन शैली में बहुत परिवर्तन किया है। आज व्यक्ति संचार माध्यमों के कारण ही भौतिक वस्तुओं का आदी हो गया है। यह प्रत्येक कार्य सरलता से करने का आदी हो गया है। व्यक्ति के सोचने, समझने, बोलने, उठने, बैठने, के तरीकों में बहुत परिवर्तन आया है।

4- 'kks/k gsrq i;Dr i)fr ,o fun'ku dk p;uko–प्रस्तुत शोधपत्र का अध्ययन क्षेत्र निर्धारित करने के पश्चात् समस्या का व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध अध्ययन करने के लिए निदर्शन पद्धति का प्रयोग किया गया है। सर्वप्रथम शोघ पत्र से संबंधित पक्षों से जानकारी से ली गई है। इसके पश्चात् परिवारों के आधार पर सर्वेक्षण हेतु परिवारों की संख्या निर्धारित की गई और परिवारों का चुनाव दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है। परिवारों की संख्या निर्धारित करते समय यह भी ध्यान रखा गया है कि गरीब–अमीर,शिक्षित –अशिक्षित पिछडे–प्रगतिशील एवं उच्च–निम्न का सहन के स्तर वाले समस्त उत्तरदाता परिवारों का बिना किसी पक्षपात के अध्ययन किया जा सके।

परिवारों के चुनाव में दैन निदर्शन पद्धति का प्रयोग इसलिए किया गया है कि सभी परिवार के लोगो का अध्ययन कर सकें तथा पूरे विकासखण्ड का प्रतिनिधित्व अध्ययन हेतु 40 उत्तरदाताओं से संर्पक एकत्रित किया गया है।

rF; ldyu dh ifof/k;k&प्रस्तुत शोध पत्र में

वैज्ञानिक प्रणाली का प्रयोग करते हुए सर्वेक्षण अनुसूचि, साक्षात्कार और असहभागी अवलोकन पद्धति को अपनाया गया है। इसमें इनके जीवन और कार्यविधि तथा सामाजिक,आर्थिक,धार्मिक,शैक्षणिक एवं राजनैतिक सहभागिता का जनसंचार माध्यमों के संबंध तथ्य एकत्र किये गये है।

साक्षात्कार अनुसूचि का प्रयोग निम्न कारणों से किया गया।

1. उसके द्वारा समस्या का गहन,मध्य एवं विस्तृत अध्ययन संभव है।

2. इसमें अध्ययनकर्ता एवं उत्तरदाता के मध्य प्रत्यक्ष संबंध होने के कारण प्रश्नों के उत्तरों के स्पष्टीकरण के लिए दोहराव का पूरा–पूरा अवसर मिलता है, जिसमें उत्तरदाता के कथनों की सत्यता का ज्ञान होता है।

3. प्रश्नावली का महत्व केवल शिक्षित वर्ग ही समझ सकता है यद्यपि उत्तरदाता शिक्षित है, फिर भी कुछ बातों से प्रश्नों के उत्तर वे प्रश्नावली के माध्यम से सही–सही नही दे पाते। कही साक्षात्कार अनुसूचि के माध्यम से साक्षात्कारकर्ता प्रश्नों का स्पष्टीकरण करके उनसे उत्तर मांगता है।

5- v/;;u dk mnn';&निम्न केन्द्र बिन्दुओं को ध यान में रखकर हम जनसंचार के माध्यमों का अध्ययन करेंगे।

1. जनसंचार में जुडे हुए अभिप्रेरित कारकों का पता लगाना।

2. परिवार में स्त्रियो के बढते हुए प्रभावों को ज्ञात करना।

3. परिवार में बच्चों के प्रति जनसंचार के माध्यमों के प्रचार–प्रसार पर पडनें वाले प्रभावों को ज्ञात करना।

4. परिवार में बुजुर्गो पर पड़ने वाले प्रभावों को ज्ञात करना।

5. टी.वी./पत्रिका/दूरभाष/कम्प्यूटर/इंटरनेट के प्रभावों को ज्ञात करना।

6. जनसंचार से जुडें व्यक्तियों की स्थिति एवं कार्य दशाओं का अध्ययन करना।

7. जनसंचार के माध्यमों के प्रचार–प्रसार के कारण ग्राम एवं शहर की जनचेतना में आई जागृति को ज्ञात करना।

8. जनसंचार का माध्यम शिक्षित एवं अशिक्षित व्यक्तियों के लिए उपयोगी है।

6- 'kk/k l ikIr rF;k dk fo'y"k.k&

lkfj.kh Øekd 01
v/;;uxr mRrjnkrkvk dh vk;q

क्र.म.	आयु (वर्षो में)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	15 से 25	09	22.5
2.	26 से 35	18	45.0
3.	36 से 45	12	30.00
4.	46 से अधिक	01	02.5,
	योग–	40	100

उपर्युक्त तालिका के विशलेषण से स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं की आयू 26 से 35 वर्ष के बीच है एवं 15 से 25 के बीच आयु वाले उत्तरदाताओं की संख्या कम है।

lkfj.kh dekd 02
v/;;uxr mRrjnkrkvk dh f'k{kk

क.	शैक्षणिक स्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाईस्कूल	–	–
2.	हायर सेकेण्डरी	02	05.0
3.	स्नातक	19	47.5
4.	स्नातकोत्तर	19	47.5
	योग–	40	100

उपर्युक्त सारणी जनसंचार में जुड़े हुए उत्तर दाताओं के शिक्षा स्तर को दर्शाती है जनसंचार में लगभग सभी उत्तरदाता स्नातक, स्नातकोत्तर स्तर तक शिक्षा प्राप्त किये हुए है। जिससे वे जनसंचार के माध्यमों के महत्व को समझने लगे है।

lkfj.kh dekd 03
thodkiktu d lk/ku

क.	साधन	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	व्यवयाय	12	30.0
2.	नौकरी	20	50.0
3.	कुछ नहीं	08	20.0
	योग–	40	100

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि आधे उत्तर दाता नौकरी करते है एवं एक तिहाई उत्तरदाता व्यवसाय करते है।

lkfj.kh dekd 04
mRrjnkrkvk d tulpkj d lk/kuk l ifjp;

क.	साधन	हॉ		कुछ हद तक		नहीं	
		आय	प्रति.	आय	प्रति.	आय	प्रति.
अ.	दूरदर्शन	38	95.0	02	5.0	–	–
ब.	रेडियो	25	62.5	15	37.5	–	–
स.	दैनिक समाचार–पत्र	38	95.0	02	5.0	–	–
द.	विभिन्न मासिकपत्र–पत्रिकाएँ	26	65.0	14	35.0	–	–
व.	दूरभाष	35	87.5	05	12.5	–	–
ज.	फिल्म	28	70.0	12	30.0	–	–
च.	कम्प्यूटर	16	40.0	13	32.5	11	27.5

उपरोक्त सारिणी से स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता दूरदर्शन,रेडियो,दैनिक समाचार पत्र, दूरभाष तथा फिल्म से अधिक परिचित है एवं कुछ उत्तरदाता ही इन संचार के साधनों से कम परिचित है। आधे से कम उत्तरदाता कम्प्यूटर को अच्छे से जानते है तथा एक–तिहाई उत्तरदाता कम्प्यूटर के बारे में कुछ नही जानते है।

संचार माध्यमों को समाज के लिए सकारात्मक एवं उपयोगी बनाने हेतु सुझाव

1. जनसंचार माध्यमों की सफलता बहुत कुछ उचित प्रकार से नेतृत्व के विकास पर निर्भर करती है।

2. ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त गरीबी, बेरोजगारी और अशिक्षा को दूर किया जाए, ताकि ग्रामीण लोग जनासंचार माध्यम के महत्वों को समझे एवं साक्षरता का प्रचार प्रसार किया जाए एवं ग्रामीण क्षेत्रों में जनचेतना उत्पन्न की जाए।

3. ग्रामीण क्षेत्रों में यातायात एवं तीव्रगामी संचार–व्यवस्था, समाचार पत्र, नवीन तकनीकी ज्ञान, नवीन कौशल से संबंधित विषयों से उन्हें अवगत कराया जाए।

4. संचार–साधनों के सूचना प्रेषण में निष्पक्षता की भावना हो। संचार–माध्यम को किसी पार्टी या शासन का पक्षधर नही होना चाहिए। उसमें निष्पक्षता एवं स्पष्टवादिता होनी चाहिए।

5. व्यक्तियों का प्रथम कर्तव्य है कि किसी भी योजना का दुरूपयोग न करें तथा इनका प्रयोग समाज एवं संस्कृति को ध्यान में रखते हुए किया जाए।

6. सर्वप्रथम संचार–माध्यम को शत–प्रतिशत निष्पक्ष होना होगा, ताकि यह समाज का अनिवार्य अंग बन सके।

7. संचार–साधनों का उपयोगी बनाने हेतु रूढिग्रस्त समाज का परिवर्तन कर, अंधविश्वास एवं छुआछुत की भावना से मुक्त करने के लिए प्रयास करना होगा।

8. संचार–माध्यम को उपयुक्त नियंत्रण में होना चाहिए, ताकि व्यक्ति, समाज व देश का सर्वागीण विकास हो सके। उपरोक्त सुझाव अध्ययनगत उत्तरादाताओं का विचारो से प्राप्त हुए है।

fu"d"k&जनसंचार माध्यमों का उपयोग भारतीय समाज के विविध वर्ग अपनी आर्थिक क्षमतानुसार कर अपने बहुमुखी विकास की ओर उन्मुख हो रहे है। समाज का उन्नत वर्ग सभी विकसित जनसंचार माध्यमों का उपयोग करता है,जबकि मध्यम एवं निम्न वर्ग उतने प्रभावशील तरीको से उपयोग नहीं कर पा रहे है।

जनसंचार माध्यमों के प्रचार प्रसार से समाज में कृषि, वाणिज्य, व्यवसाय, शैक्षणिक, उद्योग, कला, संस्कृति,राजनीति,आदि सभी क्षेत्रों में क्रातिकारी परिवर्तन आ रहे है, जिसमें समाज अपने नये आयामों को प्राप्त कर रहा है। इसलिए यह कहना कोई अतिश्योक्ति नही होगा कि ''जनसंचार माध्यम वे शिल्पकार है जो समाज रूपी भवन को नवीनतम एवं आधुनिकतम स्वरूप प्रदान कर रहे है।''

lnHkZ lwph

1. अग्रवाल जी.के–समाज शास्त्र–साहित्य भवन पब्लिकेशन
2. बघेल डी.एस.–समाजिक अनुसंधान–साहित्य भवन पब्लिकेशन
3. प्रो. गुप्ता एवं शर्मा–यूनीफाईड समाजशास्त्र – साहित्य भवन पब्लिकेशन
4. बाबूलाल फड़िया–राजनीति विज्ञान–साहित्य भवन पब्लिकेशन
5. वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा–समाजिक अनुसंधान से तर्क एवं पद्धतियां–पंचशील प्रकाशन जयपुर
6. डॉ. बी.एल.कपाड़िया–लोकसंपर्क–साहित्य भवन पब्लिकेशन

if=dk,¡

1. आनन्द शर्मा–इलेक्ट्रानिकी आपके लिए, 2001 जुलाई पृ.–2
2. आनन्द शर्मा– इलेक्ट्रानिकी आपके लिए, 2001 सितम्बर पृ. –19
3.शशांक राय–कम्प्यूटर संचार सूचना, 2001 जून पृ.–7
4. जें भाग्यलक्ष्मी (2002)ग्रामीण संचार में भागीदारी की ओर बढते कदम,योजना,पृ–65

lekpkj&i=

1. सुनील कुमार–देशबन्धु 4 सित.2003
2. स्व. रामगोपाल माहेश्वरी नवभारत 27 नवंबर 2002
3. स्व. रामगोपाल माहेश्वरी नवभारत 06 नवंबर 2003